بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 23.01.2026

आँहज़रत ﷺ की मुहब्बते इलाही का ईमान बढ़ाने वाला तज़किरा (वर्णन)।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के.,स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (सुलह महीने की तिथि 23,1404 हश) 23.01.26

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूरे अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत ﷺ की सीरत का बयान हो रहा था, पिछले खुत्बों में मुहब्बते इलाही का ज़िक्र हो रहा था, उसी के बारे में आज कुछ और बयान करूंगा। आप स. की इबादत का तरीक़ा और उसकी सुन्दरता कुछ पहले भी बयान हुई थी, आज भी हदीसों के हवाले से भी और इसी तरह हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. ने जिस तरह आँहज़रत ﷺ के मक़ाम और मरतबे (स्तर) और इश्क़े इलाही का नक़शा खींचा है, उसके भी खुछ हवाले हैं।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी. बयान करते हैं कि मैंने नबी स. के साथ एक रात नमाज़ पढ़ी, तो आप स. ने सूरः अल-बक़रा से शुरु किया। मैंने सोचा कि आप स. 100 आयतों पर रुकू करेंगे, लेकिन आप स. आगे बढ़ गए। फिर मैंने सोचा कि इस पर (सूरः पूरी होने पर) रुकू कर लेंगे, लेकिन आप फिर आगे निकल गए, फिर आप स. ने सूरः निसा शुरू फ़रमा दी, और आप स. ने उसे पढ़ा। फिर आप स. ने सूरः आले-इमरान शुरु फ़रमा दी और उसे पढ़ा। आप स. बड़े धीमे अंदाज़ में और ठहर ठहर कर पढ़ते थे। जब आप स. ऐसी आयत से गुज़रते जिसमें तस्बीह होती तो तस्बीह करते। जब आप स. किसी सवाल वाली आयत से गुज़रते तो सवाल करते, और जब ऐसी आयत से गुज़रते, जहां

अल्लाह तआला की पनाह मांगने का ज़िक्र होता तो पनाह मांगते। फिर आप स. रुकू किया और कहने लगे- سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ पाक है मेरा रब बड़ी अज़मत वाला, और आप स. का रुकू आप स. के क़याम (नमाज़ में खड़े होना) जितना ही था, बड़ा लम्बा रुकूअ था। फिर आप स. ने سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَه कहा, अर्थात- अल्लाह ने सुन ली उसकी, जिसने उसकी तारीफ़ की। फिर आप स. देर तक खड़े रहे, जो आप स. के रुकू जितना ही था। फिर आप स. ने सजदा किया और कहा- سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى पाक है मेरा रब, बड़ी ऊंची शान वाला, और आप स. का सजदा आप स. के क़याम जैसा था।

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ी. बयान करती हैं कि एक रात नबी स. ने क़ुरआन मजीद की एक ही आयत की तिलावत करते हुए क़याम फ़रमाया। वहाँ तो सहाबी की रिवायत है कि कई लम्बी सूरतें पढ़ीं, यहाँ यह है कि एक ही आयत पढ़ते पढ़ते लम्बे समय तक खड़े रहे। इसी तरह हज़रत अबूज़र रज़ी. ने बयान किया कि नबी स. इबादत के लिए खड़े हुए और एक ही आयत को सुबह तक बार बार पढ़ते रहे कि, अगर तू इन्हें अज़ाब दे तो आख़िर ये तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें माफ़ कर दे तो यक़ीनन (निःसंदेह) तू कामिल (सम्पूर्ण) गलबे वाला (और) हिकमत वाला है।

फिर हज़रत आयशा रज़ी. से रिवायत है, वे कहती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में सूरज ग्रहण हुआ, रसूलुल्लाह स. ने नमाज़ पढ़ाई। आप स. ने बड़े लम्बे क़याम, रुकू और सजदे करने के बाद नमाज़ पूरी की और सूरज पूरा चमक चुका था, फिर आप स. ने लोगों को ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया। आप स. ने अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और उसकी सना (स्तुति) बयान की। फिर फ़रमाया- सूरज और चाँद अल्लाह तआला के निशानों में से हैं और ये दोनों किसी व्यक्ति की मौत और किसी के जीवन के लिए नहीं गहनाए (ग्रहण) जाते। अतः जब तुम इन दोनों को देखो तो अल्लाह तआला की बड़ाई बयान करो, अल्लाह तआला से दुआ करो, नमाज़ पढ़ो और सदक़ा दो। फिर फ़रमाया- ऐ मुहम्मद ﷺ की उम्मत! अल्लाह तआला से बढ़ कर कोई भी आदमी गैरत वाला नहीं है कि उसका बन्दा ज़िना (व्यभिचार) करे या उसकी बन्दी ज़िना करे, यह बड़ा ही दिल हिला देने वाला अंज़ार (चेतावनी) है कि गुनाहों में मुलव्विस (लिप्त) हो कर अल्लाह तआला की गैरत को न भड़काओ, अल्लाह तआला से रहम मांगो और उसकी गैरत को भड़काने से बचो। फिर आप स. ने फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद (स.) की उम्मत! ख़ुदा की क़सम, अगर तुम वह जानते जो मैं जानता हूँ तो तुम बहुत ज़यादा रोते और बहुत कम हँसते। फिर आप स. ने फ़रमाया- सुनो, क्या मैंने पहुंचा दिया?

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अतः आप स. ने ख़ुदा तआला की तरफ़ झुकने, उसकी इबादत करने और उसकी तरफ़ पलटने की तरफ़ ध्यान दिलाया, और फ़रमाया कि इसी में तुम्हारी भलाई है, इसी में तुम्हारी ज़िन्दगी है, और अगर तुम्हें इन बातों की गहराई का पता हो, जिस तरह मुझे पता है तो तुम लोग हँसना भूल जाते और रोते ज़यादा, और अल्लाह तआला से दुआएं करते।

अतएव यह ध्यान दिलाया कि हमें भी दुआओं की तरफ़ बहुत तवज्जो देनी चाहिए और अल्लाह तआला से ख़ास ताल्लुक (विशेष सम्बन्ध) पैदा करना चाहिए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसी तरह आप स. कोई बड़ा काम अल्लाह की आज्ञा के बिना नहीं करते थे। जब अल्लाह का हुक्म होता था तो करते थे। इस लिए हम देखते हैं कि मक्के के लोगों के कड़े अत्याचार के बावजूद आप स. ने मक्का उस समय तक नहीं छोड़ा जब तक ख़ुदा तआला की तरफ़ से आप स. पर व्हयी नाज़िल न हुई और व्हयी के द्वारा आप स. को मक्का छोड़ने का हुक्म न दिया गया। मक्का वालों के ज़ुल्मों की शिद्दत को देख कर आप स. ने जब सहाबा रज़ी. को हबशा देश की तरफ़ हिजरत कर जाने की इजाज़त दी और उन्होंने आप स. से कहा कि आप स. भी उनके साथ चलें तो आप स. ने फ़रमाया कि मुझे अभी ख़ुदा की तरफ़ से इजाज़त नहीं मिली।

मुहब्बते इलाही के बारे में, ताएफ़ के सफ़र में आप स. के ज़ख़्मी होने की घटना तारीख़ में बयान हुई है। 10 नबवी में अबू तालिब की वफ़ात के बाद जब क़ुरैश ने रसूलुल्लाह स. पर दोबारह ज़ुल्म करने शुरू कर दिए तो आप स. ताएफ़ तशरीफ़ ले गए। आप स. दस दिन तक ताएफ़ में रहे और इसलाम की दावत देते रहे लेकिन किसी ने भी आप स. की दावत को क़ुबूल न किया। सही बुख़ारी में इस वाक़े के बारे में रिवायत है कि हज़रत आयशा रज़ी. ने नबी स. से निवेदन किया कि क्या आप स. पर ओहद के दिन से अधिक मुश्किल कोई दिन आया है? आप स. ने फ़रमाया वह दिन ज़्यादा सख्त था जो मुझे उनकी तरफ़ से उक़बा के दिन पहुंचा, अर्थात ताएफ़ में, जब मैंने अपना मक़सद इब्ने अबी अब्दे लैल बिन अब्दे कुलाल के सामने पेश किया, तो जो मैं चाहता था उसने वह जवाब न दिया। अतः मैं वहां से चला और मैं फ़िकरमंद (चिन्तित) था, अपने ध्यान में जा रहा था। जब मैं क़रने सालिब पहुंचा तो यह कैफियत (अवस्था) दूर हुई और मैंने अपना सर उठाया तो देखा कि एक बादल सा मुझ पर साया किये हुए है। मैंने देखा कि उसमें जिब्रील अलै. हैं, उन्होंने मुझे पुकार कर कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे बारे में तुम्हारी क़ौम की बात सुन ली है और तुम्हारी तरफ़ पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है कि तुम उनके बारे में जो चाहो हुक्म करो। आँहज़रत ﷺ फ़रमाते हैं कि फिर मुझे पहाड़ों के फ़रिश्ते ने पुकारा और सलाम किया, फिर कहा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ) आप इस बारे में जो चाहें हुक्म दें, अगर आप चाहें तो मैं इन दो पहाड़ों को इन पर मिला दूं, तो नबी स. ने फ़रमाया कि नहीं! मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह उनकी औलाद में से ऐसे लोग पैदा करेगा जो एक अल्लाह की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएंगे। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अतः आप स. की हमदर्दी यहां भी ग़ालिब आई और आप स. ने उस क़ौम को बचा लिया और फिर मक्का पर विजय के कुछ समय बाद उनकी औलादों ने इस्लाम भी क़ुबूल कर लिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. आँहज़रत ﷺ के मक़ाम व मर्तबे के बारे में बयान करते हुए

फ़रमाते हैं कि वह आला दर्जे (उत्तम स्तर) का नूर जो इंसान को दिया गया, यानी इंसाने कामिल को, वह मलाएक में नहीं था, नजूम (सितारों) में नहीं था, क़मर में नहीं था, आफ़ताब में भी नहीं था, वह ज़मीन के समन्दरों और दरयाओं में भी नहीं था, वह लाल और याकूत और ज़मुर्रद और अलमास और मोती (बहु मूल्य हीरे पन्ने आदि) ग़रज़ (अर्थात) वह किसी चीज़ अर्ज़ी व समावी (धरती एवं आकाश) में नहीं था, सिर्फ़ इंसान में था, यानी इंसाने कामिल में, जिसका अतम व अकमल और आला और अरफ़ा फर्द (सबसे बढ़ कर, सर्वोत्तम मनुष्य) हमारे सय्यद व मौला, ससय्येदुल अम्बिया, सय्यदुल अहया, मुहम्मदे मुस्तुफ़ा ﷺ हैं। सो वह नूर इस इंसान को दिया गया और हस्बे मरातिब (जैसा जिसका स्तर) इसके तमाम हम रंगों को भी, यानी उन लोगों को भी जो किसी क़दर वही रंग रखते हैं।

हुज़ूरे अनवर ने इसके बारे में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के और ज़्यादा बसीरत अफ्रोज़ इक्तिबासात (ईमान को बढाने वाले कथन) पेश करने के बाद फ़रमाया कि आँहज़रत ﷺ के मक़ाम व मर्तबे का यह वह आला क़िस्म का इदराक (उच्च कोटि की अनुभूति) था जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. को अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया और आप स. ने हमारे लिए भी बयान फ़रमाया। इसके बावजूद हमारे मुखालिफीन (विरोधी) हमें कहते हैं कि हम नऊज़ुबिल्लाह, आँहज़रत ﷺ की तौहीन (निन्दा) करते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलै. को ज़्यादा मक़ाम देते हैं। अल्लाह तआला इनके शर से हर अहमदी को बचाए।

हुज़ूरे अनवर ने आँहज़रत ﷺ की अंधेरी रातों की मक़बूल (स्वीकृत) दुआओं की तासीर (प्रभाव) बयान करते हुए फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि मैं अपने ज़ाती तजरबे (व्यक्तिगत अनुभव) से यह भी देख रहा हूँ कि दुआओं की तासीर आबो आतिश (पानी और आग) की तासीर से बढ़ कर है, बल्कि असबाबे तबीअ: (प्रकृति) के सिलसिले में कोई चीज़ ऐसी अज़ीमुत्तासीर (महान प्रभाव) नहीं जैसी कि दुआ है। आख़िर में हुज़ूरे अनवर ने इसके बारे में दुआ की- अल्लाह तआला हमें इस रास्ते पर चलते हुए मक़बूल दुआओं की तौफ़ीक़ दे और हक़ीक़ी रंग में दुआएं करने की तौफ़ीक़ दे और हक़ीक़त में वह असली मोमिन बनाए जो दुआओं का भी हक़ अदा करने वाला हो और आँहज़रत ﷺ के उस्वे पर चलने की कोशिश करने वाला भी हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652